

CAMIA

- | | |
|-------|---|
| (Δη.) | ούτοις μελαγχολᾶι. |
| | εἰςπεπήδηκεν. τί τούτοις τοῖς κακοῖς τις χρήσεται; |
| | οὐδεπώποτ' εἰς τοιαύτην ἐμπειρών, μὰ τοὺς θεούς, 565
οἶδα ταραχήν. ἔστι μέντοι τὸ γεγονός φράσαι σαφῶς (221)
πολὺ κράτιστον. ἀλλ', Ἀπολλον, ή θύρα πάλιν ψοφεῖ.
Χρ. ὡς τάλαιν' ἐγώ, τί δράσω; ποῦ φύγω; τὸ παιδίον
λήψεται μου. |
| Δη. | Χρυσί, δεῦρο. |
| (Χρ.) | τίς καλεῖ με; |
| (Δη.) | εἴςω τρέχε. |
| Νι. | ποῦ σύ, ποῦ φεύγεις; |
| (Δη.) | Ἀπολλον, μονομαχήσω τῆμερον, 570
ώς ἔοικ', ἐγώ. τί βούλει; τίνα διώκεις; |
| (Νι.) | Δημέα, (226)
ἐκποδὼν ἄπελθ'. ἔα με γενόμενον τοῦ παιδίου
ἐγκρατῆ τὸ πρᾶγμ' ἀκοῦσαι τῶν γυναικῶν. |
| (Δη.) | μηθαμῶς. |
| (Νι.) | ἀλλὰ τυπτήσεις με; |
| (Δη.) | ἔγωγε.—θᾶττον εἰςφθάρηθι σύ. |
| (Νι.) | ἀλλὰ μὴν κάγώ σε. |
| (Δη.) | φεῦγε, Χρυσί· κρείττων ἔστι μου. 575 |
| (Νι.) | πρότερος ἄπτει μου σὺ νυνί· ταῦτ' ἐγὼ μαρτύρομαι. (231) |
| Δη. | σὺ δ' ἐπ' ἐλευθέραν γυναικα λαμβάνεις βακτηρίαν
καὶ διώκεις. |
| (Νι.) | συκοφαντεῖς. |
| (Δη.) | καὶ σὺ γάρ. |
| (Νι.) | τὸ παιδίον |
| | ἐξένεγκέ μοι. |
| (Δη.) | γελοῖον· τούμόν. |
| (Νι.) | ἀλλ' οὐκ ἔστι σόν. |
| (Δη.) | ἐμόν. |
| (Νι.) | ἰὼ νθρωποι. |
| (Δη.) | κέκραχθι. |
| (Νι.) | τὴν γυναικ' ἀποκτενῶ 580 |